Stakeholder's Meeting for Advocacy

Project: Addressing Barriers to Rice Seed Trade between India and Bangladesh
Supported by: CUTS Internationa, Jaipur
Organized by: BWDS, Patna
Thursday, 24th April, 2014
Venue: KVK, Aurangabad

हिन्दुस्तान पटना • शुक्रवार • 25 अप्रैल 2014 04

मार्केटिंग को लेकर होने वाली समस्या पर भी डाला प्रकाश

फसलों की बढ़ेगी उत्पादकता

औरंगाबाद | संवाद सूत्र

धान बीज के बढ़ते उत्पादन के बावजूद भारत के कई राज्यों में धान का उत्पादन कम रहा है। उक्त बातें गुरुवार को कृषि विज्ञान केन्द्र सिरिस में आयोजित एक कार्यक्रम में वक्ताओं ने कही। कट्स इंटरनेशनल जयपुर एवं बिहार वाटर डेवलपमेंट सोसाइटी, पटना के संयुक्त अध्ययन को भी किसानों के सामने रखा गया।

वक्ताओं ने कहा कि बिहार में धान की उत्पादकता के कम होने के पीछे निम्न बीज प्रतिस्थापन भी बहुत बड़ा कारण है। कट्स इंटरनेशनल के प्रतिनिधि खुशबू खुल्लर एवं सौरभ कुमार ने कहा कि वर्ष 2010-11 में बिहार में धान की उत्पादकता 1.74 प्रति हेक्टेयर मिट्रिक टन थी जबकि पश्चिम बंगाल में यह 4.16 और पूरे भारत में औसतन 3.58 मिट्रिक टन था।

बिहार में बीज प्रतिस्थापन की दर वर्ष 2011-12 में 33 प्रतिशत थी जबकि आंध्र प्रदेश में यह 87.21 थी। उन्होंने कहा कि किशनगंज, सहरसा एवं पूर्णिया जैसे जिलों में व्यापक तौर पर बांग्लादेशी धान बीज प्रभेद बी.आर. 9 व बीआर 11 का उपयोग होता है। वहीं भारतीय प्रभेदों जिसमें स्वर्णा, राजेन्द्र भगवती, राजेन्द्र श्वेता आदि हैं का उपयोग

गुरुवार को कृषि विज्ञान केन्द्र सिरिस में किसानों को संबोधित करते कृषि वैज्ञानिक व अन्य।

कार्यक्रम आयोजित

- 2010-11 में बिहार में धान उत्पादकता 1.74 प्रति हेक्ट्रेयर मिट्रिक टन था
- धान बीजों के प्रभेदों का आदान-प्रदान होता रहा तो किसानों को मिलेगा लाभ

बांग्लादेश में होता है। यदि सभी धान बीजों के प्रभेदों का आदान प्रदान होता रहे तो किसानों को लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि दोनों देश की सरकारें परीक्षण एवं बीज के आदान प्रदान पर सहमति की ओर अग्रसर हैं। डीएओ शैलेन्द्र कुमार ओझा ने कहा कि किसान भी बीज के उत्पादन में लगें तो बदलाव आ सकता है। कार्यक्रम समन्वयक डा. नित्यानंद ने कहा कि क्षेत्र के किसान बीज उत्पादन से जुड़ें।

उन्होंने इसकी मार्केटिंग को लेकर होने वाली समस्या पर भी प्रकाश डाला तथा कहा कि यदि मार्केट की व्यवस्था हो तो किसान इससे आसानी से जुड़ सकते हैं। इस अवसर पर निदेशक अमल राज, परियोजना समन्वयक अजय कुमार, जॉन डिक्रूज, डा. विपुल कुमार मंडल डा. राजीव सिंह, ई. रवि रंजन, प्रवीण कुमार आदि उपस्थित थे।